गुरु नानक का मानवतावादी दृष्टिकोण

डॉ. ललिता मीणा,
असिसटेंट प्रोफेसर,
माता सुन्दरी कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय

सार

गुरु नानक का आविर्भाव उस समय होता है जब हिन्दुस्तान की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति बहुत खराब थी। समाज में निम्न वर्ग वर्ण व्यवस्था की मार सदियों से झेल रहा था। समानता और मानवता का उपदेश समय–समय पर विभिन्न धर्मोनुयायियों द्वारा दिये जाते रहे है। नानक से पूर्व रामानन्द, नामदेव, कबीर जैसे कई महान व्यक्तित्व वाले लोगों ने भी जातीयभेद–भावको खत्म करने के अनेक प्रयास किऐ। समाज की जड़ो में व्याप्त ऊंच नीच का भेद भाव समाज सुधारको के उपदेषों के समानांतर में चलता रहा। समाज अभी जातीय भेद–भाव की पीड़ा को तो सहन कर रहा था किन्तु अब मुगलों का आक्रमण हिन्दु समाज पर दोहरी पीड़ा को जन्म देता है। अपने ही धर्म के लोगों द्वारा हो रहे शोषण से तो लोग मुक्त नहीं हो पा रहे थे और अब उन्हें साम्प्रदायिक भेदभाव की मार भी घायल कर रही थी। मानवता जीर्ण और क्षीर्ण हो रही थी। लोग बेसुध होते जा रहे थे। बाबर ने भारत में जो कत्ले आम मचाया था उसके गवाह स्वयं नानक देव जी रहे। गुरु नानक ने बाबर की सेना को 'पापी की बारात' तक कहा। नानकदेव उस समय अपनी यात्राएँ समाप्त कर करतारपुर में रह रहे थे।1

सरे आम स्त्रियों की अस्मिताओं को लूटा जा रहा था। लोग बाबर के इस क्रूर व्यवहार से डरकर एवं लज्जित होकर छिप रहे थे। अमानवीयता अपने चर्मो शिखर पर थी।

शब्द–संकेत *वर्णव्यवस्था, समानता, मानवता, धर्मोनुयायियों, पापी की बारात,अस्मिताओ, साम्प्रदायिक, गुरु, करतारपुर, निर्गुणमार्गी, संवेदनशील, आध्यात्मिक, बाह्याडम्बर, रागात्मिक, अंधविश्वास, समरसता, सहज–भाव, समन्वयवादी, समाज सुधारक, क्रान्तिकारी ।*

प्रस्तावना:

'गुरु नानक' 'नानक–पन्थ' के प्रवर्तक थ। राजनीति एवं धार्मिक परिस्थितियाँ के कारण उनको वह स्थान नही ंदिया गया जिसके वे अधिकारी थे। स्वयं हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं–"नाभादास जी ने अपने भक्त माल में उन्ही ंनिर्गुणमार्गी सन्तों को स्थान दिया जो प्रसिद्ध भक्ति–सम्प्रदायों से सम्बद्ध माने जाते थे।....गुरू नानक को स्थान नही ंमिला क्योंकि उनका संबंध किसी से नहीं जोड़ा जा सका।"[2]

गुरु नानक का जन्म 15 अप्रैल 1469 ई० अर्थात् वैशाख शुक्ला 03 संवत 1526वि. को हुआ। तलवण्डी इनकी जन्म स्थली है जोकि लाहौर जिले का गांव है। 1947 के भारत विभाजन के कारण लाहौर पाकिस्तान के अन्तर्गत चला गया। सिख धर्म के लोग तलवण्डी को ननकाना साहिब भी कहते हैं। इन की माता का

नाम तृप्ता और पिता का नाम कालू चन्द पटवारी था। इनके पिता खत्री जाति के थे। कृषि कार्य के साथ वे पटवारी का काम भी करते थे। गुरु नानक जी सरल एवं सहज स्वभाव के व्यक्ति थे। बचपन से ही असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे। किताबी पढाई लिखाई में इनका मन नहीं लगता था। खेल–कूद के स्थान पर नेत्र बंद कर चिन्तन करने में मन लगता था। गुरु नानक के इस प्रकार के असाधारण व्यवहार के कारण माता–पिता चिंतित हो जाते हैं। इसलिए उन्हें हिन्दी, संस्कृत, फारसी और पंजाबी की शिक्षा दिलाने की व्यवस्था घर पर ही की गई। नानक जी ने विभिन्न भाषाएँ सीखी। गुरु नानक अत्यंत सरल एवं सहज व्यक्तित्व के धनी थे। गुरु नानक जी को 'गुरु' से संबोधित किया जाता है। 'गुरु' शब्द, गंभीर अर्थ का द्योतक है। सद्मार्ग प्रशस्त करने वाले के लिए प्रयुक्त किया जाता है। इसका प्रयोग उसी विशिष्ट व्यक्ति के लिए किया जा सकता है जो सच्चे अर्थों में इस शब्द के गुणों को अपने में समेटे हुआ हो। गुरु नानक 'गुरु' के सभी गुणों से सम्पन्न थे। गुरु नानक जी सही मायने में एक सच्चे सन्त और गुरु थे। इन्होंने अपने निरीह व्यक्तित्व के साथ संसार के अच्छे–बुरे, ऊंच–नीच, सबल–दुर्बल, स्त्री–पुरूष, छोटे–बड़े, हिन्दु–मुसलमान, पण्डित–मोलवी आदि सभी प्रकार के लोगों को शिक्षा दी। साधारण मधुर वाणी से समाज का हर वर्ग इन से प्रभावित हो जाता था। अपने पिता को भी सच्चा सौदा के माध्यम से मानवता का पाठ सिखा देते हैं। घर के किसी कार्य में उनका मन नहीं लगता था। कहा जाता है गुरू नानक के पिता ने उन्हें कुछ पैसे देकर सौदा खरीदने के लिए भेजा किन्तु मार्ग में उन पैसे से वे कुछ भूखे साधु सन्तों को भोजन करवा देते हैं। छोटी उम्र में मानव के प्रति इतना संवेदनशील होना साधारण बात नहीं थी। मानवता का गुण गुरु नानक में सहज ही था।

वे साधु सन्तों की मंडली में भजन कीर्तन में ही आनंद पाते थे। इनके सरल स्वभाव से परेशान होकर इनके पिता इन्हें कृषि कार्य में लगा देते हैं, किन्तु वहां भी वे आध्यात्मिक चिन्तन ही करते रहते हैं।

9 वर्ष की अति अल्पायु में गुरु नानक समाज को जो शिक्षा देते हैं वह शिक्षा बड़े से बड़े कहे जाने वाले महापुरूष भी नहीं दे सकते। इन्होंने बाह्याडम्बर का विरोध किया। इस विरोध को वे कबीर की भांति विद्रोही स्वर में नहीं करते। वे बिल्कुल शान्त सरल वाणी में पण्डित को समझा देते हैं। कहा जाता है कि 9 वर्ष की अवस्था में यज्ञोपवीत की रस्म होती है। इस अवसर पर नानक पण्डित से कहते हैं :

"दइया कपाह सन्तोखु, सूतू जतु गंढ़ी सतु बटु।

एहु जनेऊ जी अका हई तापाडे धतु।।

ना एह तुटै न मलु लगै ना एहु जले न जाइ।।"[3]

अर्थात् वही जनेउ असली जनेउ है जिसका निर्माण दया रूपी कपास से, संतोष रूपी सूत तैयार हुआ हो और संतोष रूपी सूत में संयम रूपी गांठ हो सत्य उस जनेऊ की पूरन हो। यह जनेऊ न तो कभी टूटता है और न ही कभी मैला होता है। अर्थात् मानव के लिए दया, संतोष संयम एवं सत्य के गुण महत्वपूर्ण है। इस प्रकार का जनेऊ हे पाण्डे तुम्हारे पास हो तो मुझे पहनाओ। यह न तो जलता है न खोता है।

गुरु नानकजी का मन साधु सन्तों की संगति में अधिक लगता था। गरीबों की सेवा से उन्हें आनंद मिलता था। सुल्तानपुर में 'मरदाना' तलदण्डी से आकर इनके साथ रहने लगा। गुरु नानकजी पद गाया करते और मरदाना रवाब बजाया करता था। नानकजी सन्त प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वे भ्रमण किया करते थे। भ्रमण में वे विभिन्न सम्प्रदायों के उपदेशो को सुनते और स्वयं भी पद गाकर सद्मार्ग की शिक्षा देते थे। पहली उदासी (यात्रा) 1507 ई० से 1515 ई० के बीच की। जिसमें इन्होंने उत्तरी भारत पंजाब से कुरूक्षेत्र, हरिद्वार होते हुए अयोध्या, प्रयाग, काशी,

पटना, दक्षिण भारत, जगन्नाथ पुरी, रामेश्वर होते हुए सोमनाथ, द्वारिका, बीकानेर, पुष्कर, दिल्ली आदि स्थानों का भ्रमण किया। इसी यात्रा के दौरान उन्होंने रावी नदी के किनारे करतारपुर शहर बसाया। इसी समय गुरु नानकजी ने अपने सरल स्वभाव से समाज सुधार के विभिन्न कार्य किये। धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार" उन्होंने बहुतो का हृदय परिवर्तन किया। ठगों को साधु बनाया, वेश्याओं का अन्तः करण शुद्ध कर नाम का दान दिया, कर्म काण्डियों को बाह्याडम्बरों से निकाल कर रागात्मिक भक्ति में लगाया, अहंकारियों का अहंकार दूर कर उन्हें मानवता का पाठ पढ़ाया।"[4]

दूसरी उदासी (यात्रा) 1517 ई० से 1518 ई० तक रही। इसमें इन्होंने बगदाद, मक्का–मदीना की यात्रा की। तीसरी उदासी (यात्रा) 1518 ई० से 1521 ई० तक की। इसमें आबू, गुजरात, रामेश्वरम तथा सिंहल क्षेत्र की यात्रा की। चौथी उदासी (यात्रा) में इन्होंने गढ़वाल, हेमकुड, गोरखपुर, सिक्किम की यात्रा की। अपनी यात्राएं समाप्त करने के बाद वे 1521 ई० से 1539 ई० तक करतारपुर में बस गए और वहीं रहकर अपना जीवन व्यतीत किया। 1539 ई० में इन्होंने सिखों के दूसरे गुरु अंगद देव जिन्हें बाबा लहना भी कहा जाता है को गुरु गद्दी सौंपी और परमतत्व में लीन हो गए।

गुरु नानक ने अपनी यात्राओं के दौरान समाज में व्याप्त विभिन्न अंधविश्वासों को दूर किया। जैसे अपनी अन्तिम यात्रा के दौरान नानक जी सिन्ध क्षेत्र से होते हुए मक्का मदीना पहुंचे, तो वे 'कांबे' की तरफ पैर फैलाकर विश्राम करने लगे। तभी मुल्ला ने इसे तीर्थ का अनादर समझा, उन्हें डांटने लगा और कहने लगा कि 'तुम अल्लाह की तरफ पैर करके क्यों लेटे हो?' तो गुरु नानक जी ने बड़े ही निरीह सरल भाव से कहा– 'अच्छा भाई, मेरे पैर उधर कर दो, जिधर अल्लाह नहीं है। मुल्ला इनके इस प्रकार के शब्द सुनकर हैरान रह गया। अपनी यात्राओं के द्वारा गुरु नानक ने लोगों को सत्य का ज्ञान कराया। गुरु नानक बहुत वाद–विवाद में नहीं पड़ते थे। वे अपने पवित्र आचरण के द्वारा ही विरोधियों को सत्य का साक्षात्कार करा देते थे। नानक हिन्दु वर्ण व्यवस्था में विश्वास नहीं रखते थे। उनके अनुसार जो व्यक्ति सच्चा ईमानदार है वही सर्वोपरी है। जिस व्यक्ति का मन दूषित होगा वह व्यक्ति नानक जी के लिए निम्न कोटि का व्यक्ति होगा ।[5]

गुरु नानक एक क्रान्तिकारी एवं समन्वयवादी संत थे। उनके अनुसार मनुष्य का मूल्यांकन उसके धन, कुल और विद्या से नहीं करना चाहिए, बल्कि उसके पवित्र भाव एवं कर्म से उसकी पहचान करनी चाहिए। तत्कालीन समाज में जाति पाति का भेदभाव चर्मो शिखर पर था। गुरु नानक को यह भेदभाव बिल्कुल स्वीकार नहीं था। इनकी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं था। कहा जाता है एक बार गुरु नानक अपने मित्र मरदाना के साथ सैयद पुर गांव गए। यहां वे निम्न जाति के कहे जाने वाले बढ़ई लालों के घर ठहरते हैं। उसी के घर भोजन भी करते हैं। इसी गांव में 'भागो' नाम का एक जमींदार था जो साधु सन्तों को भोजन करवाता था । उनकी सेवा में विश्वास रखता था। गुरु नानक द्वारा लालो के घर खाना खाने की खबर जब भागो एवं अन्य उच्च जाति के लोगों तक पहुंचती है, तो उनके बीच बड़ी खलबली मच जाती है। तभी 'भागो' गुरु नानक को अपने घर भोजन करने के लिए निमंत्रण भिजवाते हैं। गुरु नानक 'भागो' के निमंत्रण को यह कह कर अस्वीकार कर देते हैं कि लालो की रोटी में जो परिश्रम का स्वाद है, वह अमृत तुल्य है और भागो के व्यंजनों में यह स्वाद कहां? उसमें गरीबों के खून की बूंद शामिल है। समाज में फैले घोर जातीय भेदभाव के बीच गुरु नानक द्वारा निम्न जाति के घर ठहरना एक अविश्वसनीय घटना बन जाती है।

गुरु नानक जी स्थिर स्वभाव के व्यक्ति थे। खुशी मिलने पर उनके मुख पर खुशी का भाव नहीं, दुःख मिलने पर दुःख का भाव नहीं होता था। इस प्रकार का अलौकिक आचरण विरले ही इस संसार में किसी व्यक्ति का रहा होगा। गुरु नानक अपने सहज आचरण से विरोधियों में समन्वय स्थापित करने की क्षमता रखते थे। कहा जाता है अपनी विभिन्न यात्राओं के दौरान गुरु नानक ने कलंदरों–फकीरों के जैसे कपड़े पहनते थे। कोई उन्हें पहचान ही नहीं सकता था, कि वे किस सम्प्रदाय के हैं। उसी प्रकार वे हिन्दू साधु संतो की तरह माथे पर चंदन का तिलक लगाते थे। गले में माला भी डाल लेते थे। इस प्रकार गुरु नानक ने हिन्दु एवं मुस्लिम दोनो ंही धर्म की वेशभूषा को मान्यता दी। वेशभूषा के माध्यम से भी उनकी समन्वयवादी विचारधारा लक्षित होती है। इस प्रकार की विचार धारा की तत्तकालीन समय के समाज को बहुत ज़रूरत थी। गुरु नानक जी के सामने एक महान इस्लाम धर्म था। मुस्लिम संतों की संगत उन्होंने प्राप्त की थी। उनका प्रभाव ग्रहण भी किया। किन्तु समन्वय की विराट भावना को उन्होंने सदैव अपने साथ रखा। इनके मन में कभी भी भेदभाव नहीं आया। इन्होंने शक्तिशाली इस्लाम के अच्छे सिद्धान्तों को सहजभाव से अपनाया। सहजभाव से विषमताओं में ताल मेल स्थापित किया है। मध्यकालीन युग के वे सच्चे समाज सुधारक थे। समाज में व्याप्त व्याधि को उसकी जड़ में जा कर उसका निवारण करने का कार्य किया। उनकी वाणी में उपलब्ध समरसता उनके जीवन में भी देखने को मिलती है। वे मानते हैं कि ऊँच–नीच की भावना का समाज में कोई स्थान नहीं होना चाहिए। सभी मनुष्य ईष्वर की संतान हैं। इसलिए सभी मनुष्य समान हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. हिन्दी साहित्य कोश– भाग–2, नामवाची शब्दावली, सम्पादक– धीरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ सं. – 300
2. सिक्ख गुरुओं का पुण्य स्मरण–हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, आसा की वार महला।, पृष्ठ–471
4. हिन्दी साहित्य कोश– भाग–2, नामवाची शब्दावली, सम्पादक– धीरेन्द्र वर्मा पृष्ठ सं. – 300
5. सिक्ख गुरुओं का पुण्य स्मरण–हजारी प्रसाद द्विवेदी पृष्ठ–20
6. गुरु नानक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
7. भारतीय संत परंपरा–बलदेव वंशी
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ नगेन्द्र